Gause Paak Ka Shouqe ilme Deen (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 322
Weekly Booklet : 322

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के ईमान अफ़रोज़ बयान का तह़रीरी गुलदस्ता, बनाम

رحمۃ اللہ علیہ
ग़ौसे पाक का शौक़े इ़ल्मे दीन

सफ़ह़ात 20

मज़ार मुबारक ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ

60 डाकू कैसे ताइब हुए ? 01
जब बन्दा सच बोलता है तो... 04
औलिया की सब से अफ़ज़ल क़िस्म 06
बा अ़मल उस्ताद 10

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

पेशकश :
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**ग़ौसे पाक** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **का शौक़े इल्मे दीन**
सिने त़बाअ़त	:	रबीउ़ल अव्वल **1445** हि., अक्तूबर **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का शौक़े इल्मे दीन**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का शौक़े इल्मे दीन[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला "**ग़ौसे पाक का शौक़े इल्मे दीन**" पढ़ या सुन ले उसे इल्मे दीन ह़ासिल करने का शौक़ और अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा कर और मां बाप समेत उस की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मैं ने गुज़श्ता रात अ़जीब वाक़िआ़ देखा, मैं ने अपने एक उम्मती को देखा जो पुल सिरात़ पर कभी घिसट कर और कभी घुटनों के बल चल रहा था, इतने में वोह दुरूद आया जो उस ने मुझ पर भेजा था, उस ने उसे पुल सिरात़ पर खड़ा कर दिया यहां तक कि उस ने पुल सिरात़ पार कर लिया। (معجم کبیر، 25/282، حدیث 39)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सच की बरकत से 60 डाकू ताइब हो गए

9 ज़िल ह़ज शरीफ़ को एक लड़का अपने घर से बाहर निकला और खेत में हल चलाने वाले एक बैल के पीछे हो लिया। अचानक बैल उस

---

1 ... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 3 और 4 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी मुत़ाबिक़ 30 नवम्बर और यकुम दिसम्बर 2019 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी मुज़ाकरे से क़ब्ल "ग़ौसे पाक का शौक़े इल्मे दीन" और "ग़ौसे पाक की इल्मी शान" के मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ की त़रफ़ से इन बयानात को कुछ ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।

लड़के की जानिब मुड़ा और नाम ले कर यूं बोला : ऐ फ़ुलां ! तुम खेलकूद के लिये नहीं पैदा किये गए। लड़के ने बैल को इस त़रह़ बात करते सुना तो ख़ौफ़ज़दा हो कर फ़ौरन घर आया और घर की छत पर पहुंचा तो क्या देखता है कि सेंकड़ों मील दूर मैदाने अ़रफ़ात का मन्ज़र दिखाई दे रहा है जिस में हुज्जाजे किराम घरों से दूर **अल्लाह** पाक की रिज़ा के हुसूल की ख़ातिर जम्अ़ थे। उस लड़के ने येह देखा तो अपनी वालिदा की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "मेरी प्यारी अम्मीजान ! मुझे **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये राहे ख़ुदा में वक़्फ़ कर दीजिये और मुझे बग़दाद शरीफ़ जा कर इल्मे दीन ह़ासिल करने और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर उन का फ़ैज़ान ह़ासिल करने की इजाज़त इ़नायत फ़रमाइये।" अम्मीजान ने इस का सबब पूछा तो उस लड़के ने बड़े एह़तिराम के साथ सारा वाक़िआ़ कह सुनाया। **अल्लाह** पाक की मरज़ी व रिज़ा पर अम्मीजान ने लब्बैक कहा और राहे ख़ुदा के इस नन्हे मुसाफ़िर के लिये सामान तय्यार करना शुरूअ़ कर दिया और चालीस दीनार (या'नी सोने के सिक्के) अपने लख़्ते जिगर (या'नी son) की क़मीस के अन्दर सी दिये। फिर सफ़र पर रवाना होने से पहले अपने लख़्ते जिगर से वा'दा लिया कि हमेशा और हर ह़ाल में सच बोलना और इस के बा'द अपने बेटे को येह कहते हुए अल वदाअ़ कहा : "जाओ ! मैं ने तुम्हें राहे ख़ुदा में हमेशा के लिये वक़्फ़ कर दिया, अब मैं येह चेहरा क़ियामत से पहले न देखूंगी।" (**अल्लाह** की येह नेक बन्दी जानती थी कि अब मैं जीते जी अपने बेटे को नहीं देख सकूंगी।)

(بہجۃ الاسرار، ص167)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मां की नसीहत मानने का सिला

येह लड़का एक छोटे से क़ाफ़िले के साथ बग़्दाद की जानिब चल पड़ा, रास्ते में एक वाक़िआ़ पेश आया कि 60 डाकू क़ाफ़िले का रास्ता रोक कर लूटमार करने लगे, उन्हों ने किसी को भी न छोड़ा और हर एक से उस का मालो अस्बाब छीन लिया मगर इस लड़के को कम उ़म्र जानते हुए किसी ने कुछ भी न कहा, एक डाकू ने क़रीब से गुज़रते हुए ऐसे ही पूछा : क्या तुम्हारे पास भी कुछ है ? लड़के ने बिग़ैर डरे जवाब दिया : हां ! मेरे पास 40 दीनार (या'नी चालीस सोने के सिक्के) हैं। डाकू ने समझा कि येह हम से मज़ाक़ कर रहा है और आगे चला गया, इस लड़के से किसी और डाकू ने भी पूछा तो उसे भी येही जवाब दिया कि उस के पास 40 सोने के सिक्के हैं। जब येह दोनों डाकू अपने सरदार के पास गए तो उसे बताया कि हम ने क़ाफ़िले में एक ऐसा जुर्अत मन्द लड़का देखा जो इस ह़ालत में भी हम से नहीं डरता और हम से मज़ाक़ करता है। सरदार ने कहा : क्या मज़ाक़ करता है ? उस को बुला कर लाओ। जब वोह लड़का आया तो सरदार के पूछने पर अब भी वोही कहा जो पहले कहा था कि मेरे पास चालीस सोने के दीनार हैं, सरदार ने तलाशी ली तो वाक़ेई उस के लिबास में से चालीस दीनार (40 सोने के सिक्के) मिल गए। लड़के के इस सच बोलने पर सब हैरान हुए और उस से सच बोलने का सबब पूछा तो लड़का कहने लगा : मेरी अम्मी ने घर से निकलते हुए वा'दा लिया था कि हमेशा और हर ह़ाल में सच बोलना और मैं अपनी अम्मी का वा'दा नहीं तोड़ सकता। डाकूओं का सरदार येह सुन कर रो पड़ा और कहने लगा : हाए अफ़्सोस ! येह लड़का अपनी अम्मी से किये हुए वा'दे की इस त़रह़ पासदारी करे और एक मैं हूं कि सालहा साल हो गए अपने रब के अ़ह्द की ख़िलाफ़ वरज़ी कर

रहा हूं। उस सरदार ने रोते हुए राहे ख़ुदा के इस नन्हे मुसाफ़िर के हाथ पर तौबा कर ली और उस के बाक़ी साथी भी येह कहते हुए तौबा करने लगे कि ऐ सरदार ! जब लूटमार के बुरे कामों में तू हमारा सरदार था अब नेकी की राह पर भी तू ही हमारा सरदार होगा। (بہجۃ الاسرار، ص168)

निगाहे वली में येह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! राहे ख़ुदा का येह नन्हा मुसाफ़िर कोई और नहीं बल्कि हमारे और आप के प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद, पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, शैख़ सय्यिद अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ थे। सच बोलने की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं कि सच की बरकत से डाकूओं को सरदार समेत तौबा की सआ़दत नसीब हो गई। हर मुसल्मान को चाहिये कि वोह अपने दीनी व दुन्यवी तमाम मुआ़मलात में सच बोले, सच बोलना नजात दिलाने और जन्नत में ले जाने वाला काम है।

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

❀ "सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह नेकी के साथ है और येह दोनों जन्नत में (ले जाने वाले) हैं और झूट से बचते रहो क्यूं कि येह गुनाह के साथ है और येह दोनों जहन्नम में (ले जाने वाले) हैं।" (ابن حبان، 7/494، حدیث:5704)

❀ "जब बन्दा सच बोलता है तो नेकी करता है और जब नेकी करता है तो महफ़ूज़ हो जाता है और जब महफ़ूज़ हो जाता है तो जन्नत में दाख़िल हो जाता है।" (مسند امام احمد، 2/589، حدیث:6652ملتقطا)

❀ "कितनी बड़ी ख़ियानत है कि तुम अपने मुसल्मान भाई से कोई बात कहो जिस में वोह तुम्हें सच्चा समझ रहा हो ह़ालां कि तुम उस से झूट बोल रहे हो।" (ابوداود، 4/381، حدیث:4971)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि बन्दा अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये झूट बोलता है कि अगर सच बोलेगा तो लोग मलामत करेंगे, बुरा भला कहेंगे ह़ालां कि इ़ज़्ज़त सच में ही पोशीदा है जब कि झूट में अगर्चे ज़ाहिरी त़ौर पर दुन्या में बे इ़ज़्ज़ती से बच भी गए लेकिन **अल्लाह** पाक की बारगाह में बरोज़े क़ियामत जो नदामत व शरमिन्दगी होगी वोह बयान से बाहर है, झूट से बचने का एक त़रीक़ा येह भी है कि बन्दा दुन्यवी ज़िल्लत के मुक़ाबले में जहन्नम की उख़्रवी ज़िल्लत और अ़ज़ाबात को पेशे नज़र रखे कि दुन्यवी ज़िल्लत तो चन्द लम्ह़ों की है और अ़न्क़रीब ख़त्म हो जाएगी लेकिन उख़्रवी ज़िल्लत तो इस से कहीं बढ़ कर है, लिहाज़ा किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह मत कीजिये, हमेशा सच बोलिये ।

ग़ीबत से और तोह़मतो चुग़ली से दूर रख ख़ूगर तू सच का दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा
उ़ज्बो तकब्बुर और बचा ह़ुब्बे जाह से आए न पास तक रिया या रब्बे मुस्त़फ़ा
अमराज़े इ़स्यां ने मुझे कर नीम जां दिया मुर्शिद का सदक़ा दे शिफ़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 132)

ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक, शहन्शाहे बग़दाद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने इब्तिदाई ता'लीम क़स्बा जीलान में ह़ासिल की, फिर मज़ीद ता'लीम के लिये सिन 488 हि. में बग़दाद तशरीफ़ लाए, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने बड़े अच्छे त़रीक़े से इ़ल्म ह़ासिल किया और अपनी ता'लीम मुकम्मल फ़रमा कर अपने ज़माने के उ़लमा में नुमायां मक़ाम ह़ासिल किया। दौराने त़ालिबे इ़ल्मी आप को फ़ाक़ा कशी (या'नी भूके रहने) की नौबत भी आई और न जाने किन किन दुश्वार गुज़ार मर्ह़लों से गुज़रना पड़ा मगर इस के बा वुजूद इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का जज़्बा ठन्डा न हुवा । निहायत मेह़नतो मशक़्क़त के साथ इ़ल्मे दीन

हासिल करते रहे और जब इस सिल्सिले की तक्मील हो गई और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़ज़्लो कमाल पर पहुंच गए, बहुत बड़े आ़लिमे दीन बन गए, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की इ़ल्मिय्यत की शोहरत दूर दूर तक पहुंच गई तो आप के उस्ताज़े मोह़तरम व मुर्शिदे गिरामी ह़ज़रते शैख़ अबू सईद मख़्रूमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दर्सो तदरीस के वासिते़ अपना मद्रसा आप के ह़वाले कर दिया जिस की ज़िम्मेदारी आप ने ख़ुशदिली के साथ न सिर्फ़ क़बूल फ़रमाई बल्कि मस्नदे तदरीस को रौनक़ बख़्श कर उ़लूमो फ़ुनून के प्यासों को सैराब करने लगे। (الطبقات الکبریٰ للشعرانی، 1/178۔ نزہۃ الخاطر الفاتر، ص20 بتغیر۔ تاریخ مشائخ قادریہ، ص125، 126۔ قلائد الجواہر، ص134)

मेरे मुर्शिद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने क़सीदए ग़ौसिया में इर्शाद फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इ़ल्म का दर्स लिया यहां तक कि मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर पहुंच गया। (क़सीदए ग़ौसिया, मदनी पंजसूरह, स. 164) मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "फ़िक़्ह सीख, इस के बा'द तन्हाई इख़्तियार कर, जो बिग़ैर इ़ल्म के ख़ुदा की इबादत करता है वोह जितना संवारेगा उस से ज़ियादा बिगाड़ेगा। अपने साथ शरीअ़त की शम्अ़ ले लो, **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से सब से ज़ियादा क़रीब रास्ता बन्दगी के क़ानून को लाज़िम पकड़ना और शरीअ़त की गिरह को थामे रखना है।" (بہجۃ الاسرار، ص106)

अह़कामे शरीअ़त रहें मल्हूज़ हमेशा मुर्शिद मुझे सुन्नत का भी पाबन्द बनाओ
अच्छों के ख़रीदार तो हर जा पे हैं मुर्शिद बदकार कहां जाएं जो तुम भी न निभाओ
अ़त्तार को हर एक ने धुत्कार दिया है या ग़ौस ! इसे दामने रह़मत में छुपाओ

(वसाइले बख़्शिश, स. 570)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! औलियाए किराम की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म सिद्दीक़ कहलाती है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सिद्दीक़ थे। (नेकी की दा'वत, स. 580)

इल्मे लदुन्नी के 70 दरवाज़े

शैख़ अबुल ह़सन इमरानी कीमाती और बज़्ज़ार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا ने बग़दाद में 591 हि. में कहा कि हम शैख़ मुह़युद्दीन अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के पास मद्रसे में "दरवाज़ए अज़्ज" में 557 हि. में ह़ाज़िर हुए और वोह अन्जीर खा रहे थे, तब आप ने खाना छोड़ दिया और देर तक बेहोशी में रहे फिर फ़रमाया : इस वक़्त मेरे दिल पर इल्मे लदुन्नी के 70 दरवाज़े खोल दिये गए। हर एक दरवाज़ा इतना कुशादा (या'नी वसीअ़) है जैसा कि आस्मान व ज़मीन की कुशादगी, फिर ख़ास लोगों में **अल्लाह** पाक की पहचान की बातें देर तक करते रहे ह़त्ता कि ह़ाज़िरीन के होश जाते रहे और हम ने कहा कि हम को येह गुमान भी नहीं कि शैख़ के बा'द कोई और ऐसा कलाम कर सके। (بہجۃ الاسرار، ص56)

अल्लाह के वली को जगह दे दो

मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने बचपन के एक वाक़िए के बारे में फ़रमाते हैं : मेरी उ़म्र दस साल थी कि मैं (एक दिन) अपने घर से मद्रसे की त़रफ़ जा रहा था, मैं ने फ़िरिश्तों को देखा जो बच्चों से कह रहे थे कि "**अल्लाह** के वली के लिये जगह कुशादा कर दो ताकि वोह बैठ जाएं।" इसी दौरान एक शख़्स हमारे क़रीब से गुज़रा जिसे मैं उस वक़्त नहीं जानता था, उस ने फ़िरिश्तों से येही बात सुनी तो उस ने एक फ़िरिश्ते से पूछा : येह लड़का कौन है ? फ़िरिश्ते ने कहा कि अ़न्क़रीब इस की शान अ़ज़ीम होगी, इस को अ़त़ा किया जाएगा, मन्अ़ नहीं किया जाएगा, इस को इख़्तियार दिया जाएगा और रोका नहीं जाएगा और इस को क़रीब किया जाएगा इस से धोका न किया जाएगा। हुज़ूरे ग़ौसे पाक

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं ने उस शख़्स को चालीस साल के बा'द पहचाना तो वोह उस वक़्त का अब्दाल[1] था। (بہجۃ الاسرار، ص48)

खुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का
अ़ज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का
लह़द में जब फ़िरिश्ते मुझ से पूछेंगे तो कह दूंगा त़रीक़ा क़ादिरी हूं नाम लेवा ग़ौसे आ'ज़म का

(वसाइले बख़्शिश, स. 93,98,99)

हैं पीरे पीरां ग़ौसे पाक हैं मीरे मीरां ग़ौसे पाक
मह़बूबे सुब्ह़ां ग़ौसे पाक वलियों के सुल्त़ां ग़ौसे पाक
मह़बूबे यज़्दां ग़ौसे पाक सुल्त़ाने ज़ीशां ग़ौसे पाक
मुश्किल हो आसां ग़ौसे पाक दो दर्द का दरमां ग़ौसे पाक
फ़रमाओ एह़सां ग़ौसे पाक राह़त का सामां ग़ौसे पाक
बुलवाओ जानां ग़ौसे पाक बन जाऊं मेहमां ग़ौसे पाक
जिस वक़्त चले जां ग़ौसे पाक या पीर ! हो एह़सां ग़ौसे पाक
पूरा हो जानां ग़ौसे पाक दीदार का अरमां ग़ौसे पाक
हो जाए मेरी जां ग़ौसे पाक बस आप पे क़ुरबां ग़ौसे पाक
टल जाए शैत़ां ग़ौसे पाक बच जाए ईमां ग़ौसे पाक
उफ़ ! ह़श्र का मैदां ग़ौसे पाक लो ज़ेरे दामां ग़ौसे पाक
हो मेरी जानां ग़ौसे पाक बख़्शिश का सामां ग़ौसे पाक

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ग़ौसे पाक की इ़ल्मी शानो शौकत

मेरे पीरो मुर्शिद शहन्शाहे बग़दाद, हु़जू़रे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने बड़े मुश्किल वक़्त में बड़ी मेह़नतो लगन के साथ इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया। आप

[1]... येह औलियाए किराम की एक क़िस्म है।

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुद फ़रमाते हैं : मैं अपने त़ालिबे इ़ल्मी के ज़माने में असातिज़ा से सबक़ ले कर जंगल की त़रफ़ निकल जाया करता था फिर बयाबानों और वीरानों में दिन हो या रात, आंधी हो या बरसात, गर्मी हो या सर्दी अपना मुत़ालआ़ जारी रखता था उस वक़्त मैं अपने सर पर एक छोटा सा इ़मामा बांधता और मा'मूली सी तरकारियां (या'नी सब्ज़ियां) खाता, कभी कभी येह तरकारियां भी न मिलतीं मगर मैं अपना मुत़ालआ़ जारी रखता, फिर नींद आती तो ख़ाली पेट ही कंकरियों से भरी हुई ज़मीन पर सो जाता।

(قلائد الجواہر، ص10 ملخصاً)

इ़ल्मी मक़ाम

जब मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने इ़ल्मे दीन से फ़राग़त ह़ासिल कर ली और आप दर्सो तदरीस की मस्नद और इफ़्ता के मन्सब पर पहुंच गए या'नी मुफ़्ती भी बन गए तो लोगों को वा'ज़ो नसीह़त और इ़ल्मो अ़मल की इशाअ़त (या'नी फैलाने) में मसरूफ़ हो गए, चुनान्चे दुन्या भर से उ़लमा व सुलह़ा (या'नी नेक लोग) आप की बारगाह में इ़ल्म सीखने के लिये ह़ाज़िर होते, उस वक़्त पूरे बग़दाद में आप का हमपल्ला कोई न था। (قلائد الجواہر، ص5، ملخصاً) आप इ़ल्म के समुन्दर थे, आप को इ़ल्मे फ़िक़्ह, इ़ल्मे ह़दीस, इ़ल्मे तफ़्सीर, इ़ल्मे नह़्व और इ़ल्मे अदब वग़ैरा उ़लूम पर महारते ताम्मा ह़ासिल थी, जब आप को आप के असातिज़ा ने इ़ल्मे ह़दीस की सनद दी तो फ़रमाने लगे : "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर अल्फ़ाज़े ह़दीस की सनद तो हम आप को दे रहे हैं, लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि ह़दीस के मआ़नी व मफ़्हूम का समझना तो हम ने आप ही से सीखा है।" (حیات المعظم فی مناقب غوث اعظم ص46، بتغیر قلیل) गोया उस्ताद कह

रहे हैं कि हम अगर्चे ज़ाहिरी तो आप के उस्ताद सही लेकिन ह़क़ीक़त में बात़िनी त़ौर पर तो आप हमारे उस्ताद हैं।

तू है वोह ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा   तू है वोह ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा

सूरज अगलों के चमक्ते थे चमक कर डूबे   उफ़ुक़े नूर पे है मेह्र हमेशा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23)

शर्हे कलामे रज़ा : ग़ौस वलियों का आ'ला मन्सब है, दीगर ग़ौस के भी आप ग़ौस हैं या'नी आप ग़ौसुल अग़्वास हैं कि दीगर ग़ौस आप के ख़ुद शैदा हैं, आप वोह कूंवां हैं कि ख़ुद कूंएं आप के प्यासे हैं।

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को इल्मे दीन के फैलाने का इस क़दर शौक़ था कि आप अपना वक़्त बिल्कुल ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाते थे, आप इ़ल्मी कामों ही में अक्सर मसरूफ़ रहते, दूसरे शहरों के त़लबा आप की ता'रीफ़ और उ़लूमो फ़ुनून में महारत की शोहरत सुन कर आप की ख़िदमत में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और आप के फ़ुयूज़ात और बरकात लूटने के लिये ह़ाज़िर होते रहे, आप इ़ल्मो अ़मल के ऐसे पैकर थे कि जो भी आप के पास इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर होता वोह ख़ाली हाथ न लौटता था, या'नी इ़ल्म के साथ साथ अ़मल भी पढ़ा देते थे।

बा अ़मल उस्ताद

येह बड़ा क़ाबिले ग़ौर नुक्ता है उस्ताद ऐसा बा अ़मल होना चाहिये कि उस के पास पढ़ने वाला बा अ़मल बन के उठे, पहले नमाज़ी था तो तहज्जुद गुज़ार बन जाए। पहले उस का ज़ाहिर दुरुस्त था तो अब उस्ताद की बरकत से बात़िन भी रोशन हो जाए, काश ! ऐसा उस्ताद हो। ह़ज़रते क़ाज़ी अबू सईद मुबारक मख़्ज़ूमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का बग़दाद में एक मद्रसा था,

वोह उस में वा'ज़ो नसीह़त और इल्म ह़ासिल करने वालों को इल्म सिखाया करते थे, जब क़ाज़ी साह़िब को हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के इल्मी व अ़मली फ़ज़्लो कमालात और फ़हमो फ़िरासत का इल्म हुवा तो क़ाज़ी साह़िब ने अपना मद्रसा आप के ह़वाले कर दिया फिर लोगों की कसीर ता'दाद आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बारगाह में इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये ह़ाज़िर होने लगी। (सीरते ग़ौसे आ'ज़म, स. 58 ब तग़य्युरे क़लील)

एक आयत के चालीस मआ़नी बयान फ़रमाए

एक दिन किसी क़ारी साह़िब ने ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की मजलिस शरीफ़ में क़ुरआने करीम की एक आयत तिलावत की तो आप ने उस आयत की तफ़्सीर में पहले एक मा'ना फिर दो इस के बा'द तीन यहां तक कि ह़ाज़िरीन के इल्म के मुत़ाबिक़ ग्यारहवीं वाले ग़ौसे पाक ने ग्यारह मआ़नी बयान फ़रमा दिये, और फिर दीगर वुजूहात बयान फ़रमाईं जिन की ता'दाद चालीस थी और हर वज्ह की ताईद में इल्मी दलाइल बयान फ़रमाए और हर मा'ना के साथ सनद भी बयान फ़रमाई, आप के इल्मी दलाइल की तफ़्सील से सब ह़ाज़िरीन ह़ैरान व दंग रह गए। (اخبارالاخیار، ص11، بتغیر)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का इज़्हारे अ़क़ीदत

इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन हैती رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के साथ ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार की ज़ियारत की, मैं ने देखा कि ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मज़ारे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ लाए और

हुज़ूर सय्यिदी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को अपने सीने से लगा लिया और इन्हें ख़िल्अ़त (या'नी बेहतरीन लिबास) पहना कर इर्शाद फ़रमाया : "ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ! बेशक मैं इल्मे शरीअ़त, इल्मे ह़क़ीक़त, इल्मे ह़ाल और फ़े'ले ह़ाल में तुम्हारा मोह़ताज हूं।" (بہجۃ الاسرار، ص226) आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शरीअ़त हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल हैं और त़रीक़त हुज़ूर के अफ़्आ़ल (या'नी आ'माल) और ह़क़ीक़त हुज़ूर के अह़वाल और मा'रिफ़त हुज़ूर के उ़लूमे बे मिसाल।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/460)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

तुझी को देखना तेरी ही सुनना तुझ में गुम होना ह़क़ीक़त मा'रिफ़त अहले त़रीक़त इस को कहते हैं
रियाज़त नाम है तेरी गली में आने जाने का तसव्वुर में तेरे रहना इ़बादत इस को कहते हैं

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/513)

"फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 26, सफ़ह़ा 433 पर है : हुज़ूर (ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) हमेशा से ह़म्बली थे और बा'द को जब ऐ़नुश्शरीअ़तिल कुब्रा तक पहुंच कर मन्सबे इज्तिहादे मुत़्लक़ ह़ासिल हुवा मज़्हबे ह़म्बल को कमज़ोर होता हुवा देख कर इस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दिया, कि हुज़ूर (या'नी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) मुह़्युद्दीन (या'नी दीन को ज़िन्दा करने वाले) और दीने मतीन के येह चारों सुतून हैं, लोगों की त़रफ़ से जिस सुतून में ज़ो'फ़ आता देखा उस की तक़्विय्यत फ़रमाई (या'नी उस को क़ुव्वत दी)।

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा
ब क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ैनो ह़रीम न वली हो न हुवा है कोई हमता तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23,24)

त़लबा से महब्बत

मेरे प्यारे प्यारे मुर्शिद ह़ज़रते ग़ौसुस्सक़लैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मुबारक ज़िन्दगी का एक अहम पहलू येह भी है कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दीन का काम ऐसे वक़्त में शुरूअ़ किया जब चारों त़रफ़ फ़ितना व फ़साद का दौरदौरा था, मिल्लते इस्लामिया काफ़ी ख़स्ता ह़ाली का शिकार थी, इन ना मुसाइद ह़ालात में हमारे प्यारे प्यारे मुर्शिद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बग़दाद शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हुए और भटकी हुई इन्सानिय्यत को राहे रास्त पर लाने के लिये नेकी की दा'वत आ़म करने का सिल्सिला शुरूअ़ किया। सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इल्मो अ़मल के पैकर और ज़बर दस्त हुस्ने अख़्लाक़ के मालिक थे, आप त़लबए किराम पर इन्तिहाई शफ़्क़त फ़रमाते, उन की छोटी छोटी ज़रूरिय्यात का भी ख़याल रखते। इमाम इब्ने क़ुदामा ह़म्बली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ज़रते ग़ौसुल आ'ज़म के बारे में सुवाल किया गया तो आप ने जवाब दिया कि हम ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की उ़म्र का आख़िरी ह़िस्सा पाया और ग़ौसे पाक के मद्रसे में क़ियाम किया, हमारा इस त़रह़ ख़याल रखा जाता कि कभी तो ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने शहज़ादे ह़ज़रते यह़या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को हमारी जानिब भेजते, वोह हमारे लिये चराग़ जलाते और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हमारे लिये अपने घर से खाना भेजा करते।

(سیر اعلام النبلاء 15/183)

कुन्द ज़ेह्न त़ालिबे इल्म पर शफ़्क़त

मेरे मुर्शिदे पाक, ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का दीनी त़लबा पर शफ़्क़त का एक पहलू येह भी था कि आप उन की कमज़ोरियों को नज़र अन्दाज़ फ़रमा दिया करते थे, येह हमारे असातिज़ए किराम के लिये बड़ी

बेहतरीन मिसाल और लाइक़े तक़्लीद वाक़िआ़ है। ह़ज़रते शैख़ अह़मद बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास एक अ़जमी (या'नी ग़ैरे अ़रबी) त़ालिबे इ़ल्म था, वोह निहायत ही कुन्द ज़ेह्न था, बहुत ही मुश्किल से कोई चीज़ उस के पल्ले पड़ती, एक दफ़्आ़ वोह त़ालिबे इ़ल्म आप की ख़िदमत में सबक़ पढ़ रहा था कि इब्ने सम्ह़ल नामी एक शख़्स हु़ज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, जब उस ने उस त़ालिबे इ़ल्म की कुन्द ज़ेह्नी और आप का उस की कुन्द ज़ेह्नी पर सब्रो तह़म्मुल देखा तो उसे बहुत तअ़ज्जुब हुवा, जब वोह त़ालिबे इ़ल्म वहां से उठ कर चला गया तो इब्ने सम्ह़ल ने अ़र्ज़ किया कि इस त़ालिबे इ़ल्म की कुन्द ज़ेह्नी और मोटी अ़क़्ल और आप के सब्र पर मुझे तो बड़ी ह़ैरत है, मेरे मुर्शिद ने फ़रमाया कि मेरी मेह़नत इस के साथ बस एक हफ़्ते से भी कम है क्यूं कि इस त़ालिबे इ़ल्म का इन्तिक़ाल हो जाएगा। ह़ज़रते अह़मद बिन मुबारक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि उस दिन से हम ने उस त़ालिबे इ़ल्म के दिन गिनना शुरूअ़ कर दिये और जब एक हफ़्ता पूरा होने को आया तो आख़िरी दिन वाक़ेई उस का इन्तिक़ाल हो गया। (قلائد الجواہر، ص8 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे पीर रोशन ज़मीर भी थे, आप को सब पता था कि येह कब मरेगा। ग़ौसे पाक का कुन्द ज़ेह्न त़ालिबे इ़ल्म पर मेह़नत करना और शफ़्क़त के साथ पढ़ाए चले जाना हमारे लिये लाइक़े तक़्लीद है, आ़म त़ौर पर उस्ताद की शफ़्क़त ज़ह़ीन त़ालिबे इ़ल्म के लिये होती है, रिज़ाए इलाही पेशे नज़र हो तो यक़ीनन कुन्द ज़ेह्न पर मेह़नत करने पर ज़ियादा सवाब मिलेगा क्यूं कि जो अ़मल दुन्या में दुश्वार होता है उतना

ही क़ियामत में नेकियों के पलड़े में वज़्न दार होगा, जैसा कि मन्क़ूल है : اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ اَحْمَزُهَا या'नी अफ़्ज़ल तरीन अ़मल वोह है जिस में ज़ह़मत ज़ियादा हो। (مرقات، 6/549، تحت الحدیث:3383) लिहाज़ा कुन्द ज़ेह्न त़ालिबे इ़ल्म पर ज़ह़मत ज़ियादा होती है, उस पर गुस्सा भी आता है कि येह समझता नहीं लेकिन अगर फिर भी कोई सब्र के साथ दीन पढ़ाता चला जाए और सवाब इकठ्ठा करता चला जाए तो क्या बात है।

अमीरे अहले सुन्नत की कमाल दीनी सोच

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मेरा येह ज़ेह्न है कि कोई कैसा ही कुन्द ज़ेह्न हो उसे मद्रसतुल मदीना या जामिअ़तुल मदीना से फ़ारिग़ नहीं करना चाहिये वरना वोह ख़ुद भी डूबेगा शायद उस का ख़ानदान भी डूब जाएगा। उस के ख़ानदान वालों को भी नफ़रत हो जाएगी कि हम अपने बच्चे को **अल्लाह** का नाम सिखाना चाहते थे, **रसूलुल्लाह** की ह़दीस सिखाना चाहते थे, बड़े अरमान से भेजा लेकिन इसे फ़ारिग़ कर दिया। **अल्लाह** पाक ने दा'वते इस्लामी को बड़ा स्टेटस और मे'यार दिया है। कोई इस त़रह़ दो हज़ार असातिज़ा को जम्अ़ कर के दिखाए। **अल्लाह** पाक का बहुत करम है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! ग़ौसे पाक की ग़ुलामी की मोहर है। बहर ह़ाल ! त़ालिबे इ़ल्म कुन्द ज़ेह्न हो उसे नज़र अन्दाज़ (Ignore) नहीं करना चाहिये, ह़त्तल मक़्दूर उस पर भी कोशिश जारी रखनी चाहिये आज नहीं तो कल, कल नहीं तो कभी न कभी तो اِنْ شَآءَاللّٰه पढ़ जाएगा, येह नहीं भी पढ़ पाएगा तो उस की औलाद आगे पढ़ जाएगी...... **अल्लाह** करे दिल में उतर जाए मेरी बात !!

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

उस्ताद का मक़्सूद

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस्ताज़ शागिर्दों पर शफ़्क़त करे और उन्हें अपने बेटों जैसा समझे। उस्ताज़ का मक़्सूद येह हो कि वोह शागिर्दों को आख़िरत के अ़ज़ाब से बचाएगा। (احیاءالعلوم، 1/82)

उस्ताद का येह मक़्सूद हो कि अपने आप को और अपने शागिर्दों को जहन्नम की आग से बचाना है। काश ! दीनी मदारिस में पढ़ाने वाले असातिज़ा अगर आज हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सीरत पर अ़मल करते हुए अपने दीनी तुलबाए किराम के साथ अपने बेटों जैसा सुलूक करें तो अच्छे इल्मी व अ़मली तौर पर मज़बूत उ़लमा की कसरत हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللہ

फ़तवा नवीसी की बादशाहत

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दर्सो तदरीस, तस्नीफ़ो तालीफ़, वा'ज़ो नसीह़त और इस के इलावा मुख़्तलिफ़ इल्मी शो'बों में इन्तिहाई महारत रखते थे, मगर ख़ास तौर पर फ़तवा नवीसी में तो आप को वोह कमाल ह़ासिल था कि उस दौर के बड़े बड़े उ़लमा, फुक़हा और मुफ़्तियाने किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم भी आप के ला जवाब फ़तवों से ला जवाब हो जाते थे। शैख़ इमाम मुवफ़्फ़क़ुद्दीन बिन क़ुदामा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम ने देखा कि शैख़ सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उन में से हैं कि जिन को वहां (बग़दाद) पर इल्मो अ़मल और फ़तवा नवीसी की बादशाहत दी गई है। (بہجۃالاسرار، ص225) आप की इल्मी महारत का येह आ़लम था कि अगर आप से इन्तिहाई मुश्किल मसाइल भी पूछे जाते तो आप उन मसाइल का

निहायत आसान और उ़म्दा जवाब देते, आप ने दर्सो तदरीस और फ़तवा नवीसी में तक़रीबन 33 साल दीने इस्लाम की ख़िदमत की, इस दौरान जब आप के फ़तावा उ़लमाए इराक़ के पास लाए जाते तो वोह आप के जवाब पर ह़ैरत ज़दा रह जाते। (بہجۃ الاسرار، ص225، ملتقطاً و ملخصاً)

मुश्किल मस्अले का आसान जवाब

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने तीन (3) त़लाक़ों की क़सम इस त़रह़ खाई है कि वोह **अल्लाह** की ऐसी इ़बादत करेगा जो उस वक़्त रूए ज़मीन पर कोई और शख़्स न कर रहा हो, अगर वोह ऐसा न कर सका तो उस की बीवी को 3 त़लाक़ें, जब हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह में येह मस्अला पेश कर के ह़ल पूछा गया कि अब वोह शख़्स क्या करे और कौन सी ऐसी इ़बादत करे कि उस की बीवी त़लाक़ों से बच जाए और क़सम भी न तोड़नी पड़े ? سُبْحٰنَ الله ! मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने पल भर में उस मस्अले का ह़ल पेश कर दिया कि येह शख़्स मक्कए मुकर्रमा चला जाए और त़वाफ़ की जगह को ख़ाली करवा कर अकेला त़वाफ़ करे, क़सम भी पूरी हो जाएगी और उस की बीवी को त़लाक़ भी नहीं होगी, आप के इस जवाब से उ़लमा ह़ैरान रह गए। (بہجۃ الاسرار، ص226 ملخصاً) वाक़ेई त़वाफ़ ही एक ऐसी मुन्फ़रिद इ़बादत है जो पूरी दुन्या में एक मक़ाम पर अदा होती है, अगर कोई अकेला बन्दा त़वाफ़ करे तो रूए ज़मीन में और कहीं त़वाफ़ करने वाला कोई नहीं होगा।

उ़लूमे मुस्त़फ़ा व मुर्तज़ा के तुम्हीं पर हैं खुले असरार या ग़ौस

(क़बालए बख़्शिश, स. 120)

हैं पीरे पीरां ग़ौसे पाक हैं मीरे मीरां ग़ौसे पाक
महबूबे सुब्हां ग़ौसे पाक वलियों के सुल्तां ग़ौसे पाक
महबूबे यज़्दां ग़ौसे पाक सुल्ताने ज़ीशां ग़ौसे पाक
मुश्किल हो आसां ग़ौसे पाक दो दर्द का दरमां ग़ौसे पाक
फ़रमाओ एहसां ग़ौसे पाक राहत का सामां ग़ौसे पाक
बुलवाओ जानां ग़ौसे पाक बन जाऊं मेहमां ग़ौसे पाक
जिस वक़्त चले जां ग़ौसे पाक या पीर ! हो एहसां ग़ौसे पाक
पूरा हो जानां ग़ौसे पाक दीदार का अरमां ग़ौसे पाक
हो जाए मेरी जां ग़ौसे पाक बस आप पे क़ुरबां ग़ौसे पाक
टल जाए शैतां ग़ौसे पाक बच जाए ईमां ग़ौसे पाक
उफ़ ! हश्र का मैदां ग़ौसे पाक लो ज़ेरे दामां ग़ौसे पाक
हो मेरी जानां ग़ौसे पाक बख़्शिश का सामां ग़ौसे पाक

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	त़लबा से मह़ब्बत	13
सच की बरकत से 60 डाकू ताइब हो गए	1	अमीरे अहले सुन्नत की कमाल दीनी सोच	15
मां की नसीह़त मानने का सिला	3		
इल्मे लदुन्नी के 70 दरवाज़े	7	उस्ताद का मक़्सूद	16
ग़ौसे पाक की इल्मी शानो शौकत	8	फ़तवा नवीसी की बादशाहत	16
एक आयत के चालीस मआ़नी बयान फ़रमाए	11	मुश्किल मस्अले का आसान जवाब	17

अगले हफ़्ते का रिसाला